होलिका महिमा एवं पूजन-विधि

'होलिका'

महिमा
एवं
पूजन-विधि

सम्पादक
ऋतशील शर्मा

प्रकाशक
पं० देवीदत्त शुक्ल स्मारक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
प्रयाग-6

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-राज २११००६ (उ० प्र०)
दूरभाष : ६०६७८३

प्रथम संस्करण

महा-शिव-रात्रि, 'व्यय' सम्वत् २०५० वि०–१० मार्च, ९४

मूल्य ३-००

मुद्रक
परावाणी प्रेस
अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-राज २११००६ (उ० प्र०)

'होलिकोत्सव' की शास्त्रोक्त विधि

'होलिकोत्सव' भारतीय ऋषियों की दूर-दर्शिता का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इस उत्सव के द्वारा देश-वासियों में पारस्परिक प्रेम और एकता की भावना पुष्ट होती है। साथ ही आगामी नव वर्ष के बारह महीनों में सुखी एवं स्वस्थ जीवन बिताने का मार्ग प्रशस्त होता है, किन्तु ये लाभ देश को तभी मिल सकते हैं, जब ऋषियों द्वारा निर्दिष्ट विधि के अनुसार इस 'उत्सव' को मनाया जाय। 'गीता' (१७/२३) में भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा है

यः शास्त्र-विधिमुत्सृज्य, वर्तते काम-कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति, न सुखं न परां गतिम् ॥

अर्थात् जो शास्त्र की विधि को छोड़कर मनमाने ढङ्ग से व्यवहार करता है, वह न तो सफलता को प्राप्त करता है, न सुख पाता है और न ही मोक्ष-लाभ कर पाता है।

ऐसी दशा में 'होलिकोत्सव' मनाने की 'शास्त्रोक्त विधि' का जानना सभी के लिए आवश्यक है। इस 'विधि' को सभी पाठक जान सकें और इसके महत्त्व को समझ सकें—इसी उद्देश्य से इस पुस्तिका में 'होलिकोत्सव'-सम्बन्धी प्रायः सभी ज्ञातव्य बातों को प्रकाशित करने का प्रयास किया गया है। आशा है, इसके फल-स्वरूप लोग इस 'उत्सव' को वास्तविक रूप से सम्पन्न करने

का प्रयास करेंगे और अधिकाधिक सुफल को प्राप्त कर अपने जीवन को धन्य करेंगे। यदि ऐसा हो सका, तो इस पुस्तिका का प्रकाशन भी सार्थक सिद्ध होगा।

वसन्तोत्सव

फाल्गुन-पूर्णिमा का उत्सव अथवा 'होलिका-दहन' के पश्चात् चैत्र - कृष्ण - प्रतिपदा से 'वसन्तोत्सव' का प्रारम्भ होता है। 'वसन्तोत्सव' कामाग्नि-संस्कार का पुण्य पर्व है। आध्यात्मिक दृष्टि से 'कामाग्नि', 'जठराग्नि' तथा 'मूलाग्नि' का एकीकरण हुए बिना मोक्ष सम्भव नहीं है।

उक्त एकीकरण की उपलब्धि के लिए सर्व-प्रथम 'कामाग्नि' के संस्कार की आवश्यकता होती है। इसी उद्देश्य से भारतीय ऋषियों ने 'वसन्तोत्सव' का विधान प्रस्तुत किया है। इस उत्सव के मनाने की विधि 'भविष्य पुराण' के उत्तर-पर्व के १३२ वें अध्याय में युधिष्ठिर एवं श्रीकृष्ण के सम्वाद के रूप में बताई गई है। यह विधि निम्न प्रकार है—

प्रतिपदा के दिन प्रातः-काल उठकर नित्य - क्रिया से निवृत्त होकर 'पितरों' और 'देवताओं' का तर्पण करे। जिनके माता-पिता जीवित हैं, उन्हें अपने माता-पिता की पूजा कर सभी देवताओं को प्रणाम करना चाहिए। इसके बाद सर्व-दोष-शान्ति के लिए 'होलिका-विभूति' की वन्दना कर उस भस्म को अपने सारे शरीर पर लगाए।

अब घर के आँगन को गोबर से लीपकर 'मूलाधार-चक्र' के द्योतक एक 'चतुरस्र' (चौकोर मण्डल) की रचना वहीं भूमि पर श्वेत चन्दन से 'बिल्व' या 'अनार' की लेखनी के द्वारा करे।

फिर विभिन्न रङ्गों के चावलों से उस 'मण्डल' को अलंकृत करे। उस सुन्दर मण्डल के ऊपर एक पीढ़ा (आम्र - काष्ठ का पाटा) या सिंहासन रखे। पीढ़े या सिंहासन पर पञ्च-पल्लवों से समन्वित सुवर्ण - गर्भित 'कलश' की स्थापना करे। कलश में श्वेत चन्दन युक्त उत्तम जल भरे।

तदनन्तर घर की सौभाग्यवती स्त्री सुन्दर वस्त्र एवं आभूषण पहनकर, दही-दूध-अक्षत-गन्ध-पुष्प द्वारा 'श्री-खण्ड' (श्वेत-चन्दन युक्त जल) की पूजा करे और उसमें 'वसोर्धारा' (गाय के शुद्ध घी की धार) छोड़े। तब उसमें 'आम्र - मञ्जरी' डाले। इस 'आम्र-मञ्जरी-युक्त श्री-खण्ड' का 'प्राशन' (आचमन) परिवार के सभी सदस्य करें।

'चैत्र - प्रतिपदा' को उक्त विधि से पूजन करने से आयु की वृद्धि, आरोग्य की प्राप्ति तथा सकल कामनाओं की पूर्ति होती है। इस दिन 'पकवान' ग्रहण करने के बाद ही इच्छानुसार भोजन करना चाहिए।

'आम्र' मङ्गल ग्रह का वृक्ष है और 'मङ्गल ग्रह' अग्नि का प्रतीक है तथा बल - वर्धक 'आज्य' (घी) पृथ्वी - तत्त्व का। इस तथ्य का रहस्य यह है कि 'अग्नि-तत्त्व' (विजया या भाँग, मद्य आदि मादक द्रव्य) का प्रयोग 'पृथ्वी - तत्त्व' (मांस, घृत, दाल आदि) के बिना नहीं करना चाहिए। इन्हीं तत्त्वों से सु - संस्कृत 'कामाग्नि' का जागरण होता है, जो मानव - समाज के लिए ऊर्ध्व-गति अर्थात् समुन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है।

१०-३-६४ —रमादत्त शुक्ल

●

अनुक्रमणिका

१. **दो शब्द** ... ३-५

- ❀ होलिकोत्सव की शास्त्रोक्त विधि
- ❀ वसन्तोत्सव

२. **'होली'-महोत्सव** ... ७-१२

- ❀ 'होली'-महोत्सव की विशेषता
- ❀ 'होली'-महोत्सव की प्राचीनता
- ❀ नए सम्वत्सर का उत्सव—'होली'
- ❀ 'होलिका'-पूजन की महत्त्व-पूर्ण क्रियाएँ
- ❀ रङ्गोत्सव और प्रेम-भावना
- ❀ 'होलिकोत्सव' और आध्यात्मिक साधना

३. **'होलिका'-पर्व का महत्त्व** ... १३-१६

- ❀ अग्नि-जागरण की मूल-प्रेरणा और 'होलिका'
- ❀ शास्त्रों, पुराणों में 'होलिका'
- ❀ 'होलिका' अर्थात् 'सर्व-दुष्टापह होम'

४. **'होरी'** ... १७-२३

- ❀ प्यारे कृष्ण सों होरी, खेलो आज नई
- ❀ त्रि-विध सङ्ग, जग खेलत होरी
- ❀ होरी आज कहाँ केयूरी ?
- ❀ हरखि हिय होली मचाई
- ❀ शिव-प्रद प्रीति लगाई

५. **'होलिका'-पूजन** ... २४-३२

- ❀ पूजन - सामग्री ३२

'होली'-महोत्सव

'होली'-महोत्सव की विशेषता

'होली - महोत्सव' भारत का प्राचीन पर्व है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसके द्वारा अनेकता में एकता की व्यावहारिक रूप से शिक्षा मिलती है।

भारत जैसे विशाल जन - संख्यावाले देश में विविध प्रकार की बहु-संख्यक जातियों के होने की सम्भावना भारतीय ऋषियों ने शताब्दियों पहले ही सोच ली थी और उनके पारस्परिक बन्धुत्व-भाव को सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने 'होलिकोत्सव' जैसे मन-मोहक पर्व का श्रीगणेश किया। इस तथ्य की पुष्टि निम्न-लिखित निर्देश से होती है :

'ब्राह्मणैः क्षत्रियैर्वैश्यैः, शूद्रैश्चान्यैश्च जातिभिः।
एकीभूय प्रकर्तव्या, क्रीडा या फाल्गुने सदा॥'

उक्त निर्देश में कितने स्पष्ट शब्दों में यह उद्‌बोधन किया गया है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और अन्य जातियों के सभी लोगों को एक होकर 'फाल्गुन' मास में सदैव होनेवाली इस क्रीड़ा में भाग लेना चाहिए।

कहने की आवश्यकता नहीं कि फाल्गुन की क्रीड़ा से तात्पर्य है--'होली' के निराले रङ्गोत्सव से ही, जिसमें बिना किसी भेद-भाव के एक दूसरे पर रङ्ग-गुलाल छोड़कर विभिन्न जातियों के लोग मिलकर एक दूसरे के उल्लास को बढ़ा सकते हैं।

'होली'-महोत्सव की प्राचीनता

'होली' का यह महोत्सव प्रायः सारे भारत में---आज से नहीं, ईसा से हजारों वर्ष पूर्व से मनाया जा रहा है। प्रह्लाद-सम्बन्धी पौराणिक गाथा तो सभी जानते हैं कि प्रह्लाद की बुआ होलिका उन्हें गोद में लेकर इस उद्देश्य से अग्नि में बैठी थीं कि प्रह्लाद जल जाएँगे और वे अपनी अग्नि-सिद्धि के प्रभाव से बच जाएँगी, किन्तु हुआ उल्टा। प्रह्लाद का बाल भी बाँका न हुआ और होलिका भस्म हो गईं! तभी से आसुरी शक्ति पर दैवी शक्ति की विजय के प्रतीक-रूप में प्रति वर्ष फाल्गुन की पूर्णिमा की रात्रि में 'होलिका-दहन' किया जा रहा है, किन्तु इस कथा के अतिरिक्त अन्य सन्दर्भों से भी इस महोत्सव की प्राक् - ऐतिहासिकता की पुष्टि होती है।

जैसा कि प्रारम्भ में ही सङ्केत किया गया है, इस महोत्सव से अनेकता में एकता की भावना की पुष्टि होती है। सभी वर्गों के लोगों को, चाहे परस्पर परिचित हों या अपरिचित, मित्र-भाव से रहते हों या शत्रु-भाव से---इस 'होलिकोत्सव' के अवसर पर सभी भेद-भाव को दूरकर, वैमनस्य को भूलकर एक-दूसरे से मिलकर आनन्द मनाने का अवसर मिलता है। यह अवसर वर्तमान परिस्थितियों में भारत के लिए कितना उपयोगी है, यह कहने की आवश्यकता नहीं।

नए सम्वत्सर का उत्सव—'होली'

इसके अतिरिक्त, जैसा कि भारतीय ऋषियों का दृष्टि-कोण रहा है, 'होली' का यह महोत्सव भी दो ऋतुओं के 'सङ्गम-काल'

में निर्धारित किया गया है। शारीरिक, मानसिक स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक साधना की दृष्टि से यह तथ्य विशेष महत्त्व रखता है। 'होलिका-दहन' के अवसर पर जो मन्त्र पढ़े जाते हैं और जो क्रियाएँ की जाती हैं, यदि उन पर ध्यान दिया जाय, तो यह महत्त्व की बात सहज ही स्पष्ट हो जाती है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि नया वर्ष प्रारम्भ होने पर उसके सम्बन्ध में उत्सव मनाने की परिपाटी सारे विश्व में प्रचलित है। ईसवी वर्ष का प्रारम्भ १ जनवरी को होता है, उस दिन नव-वर्षोत्सव कितने धूम - धाम से मनाया जाता है, यह आधुनिक प्रचार-साधनों की बदौलत किसी से छिपा नहीं है।

यशस्वी धर्म - प्राण हिन्दू - सम्राट् विक्रमादित्य के नाम से धार्मिक जगत् में प्रचलित 'विक्रमीय' वर्ष के अन्तिम मास 'फाल्गुन' के अन्तिम दिन 'पूर्णिमा' को आयोजित होनेवाला 'होली' का यह उत्सव भी 'विक्रम सम्वत्सर' की समाप्ति एवं नए सम्वत्सर के प्रारम्भ का सूचक है। इस प्रकार इस महोत्सव के द्वारा भारतीय जनता अपने 'निजी' सम्वत्सर की काल-गणना के प्रति सचेत हो उठती है।

सङ्कल्प के बाद इस अवसर पर आराध्य देवता का आवाहन करते हुए उससे पूजा स्वीकार करने के लिए कहते हैं—

शिशिरस्यान्तके देवि ! वसन्त-मदन-प्रिये !
आगताऽसि विधानेन, पूजां मे हर होलिके !

अर्थात् हे होलिके, देवि ! तुम वसन्त ऋतु और कामदेव की प्रिया हो। शिशिर ऋतु के अन्त में आई हो। मेरी स-विधि पूजा को स्वीकार करो।

इस वचन के द्वारा 'शिशिर', 'वसन्त' और 'मदन'—तीन महत्त्व-पूर्ण स्थितियों के प्रति ध्यान आकृष्ट होता है। प्रथम दो–'शिशिर' और 'वसन्त' से परिवर्तन-शील ऋतु - काल का ज्ञान मिलता है, तो 'मदन' अर्थात् कामदेव से मानसिक अवस्था का दिग्दर्शन होता है।

ऋतु-परिवर्तन के साथ ही मौसम बदलता है, जिसका प्रभाव पाचन-शक्ति पर पड़ता है। अतएव खान-पान में तदनुसार सुधार करना होता है। मानसिक प्रवृत्ति में भी सहज परिवर्तन होता है, जिसके अनुसार संयम और अनुशासन के प्रति ध्यान देना होता है।

'होलिका'-पूजन की महत्त्व-पूर्ण क्रियाएँ

'होलिका-पूजन' करने के बाद तीन महत्त्व-पूर्ण क्रियाएँ की जाती हैं—

'पहली क्रिया' के अनुसार कच्चे सूत से अपने शरीर को नाप कर उस सूत को होली की आग में छोड़ दिया जाता है। इसकी विधि यह है कि सूत का एक छोर दाएँ पैर के अँगूठे के नीचे दाब लेते हैं, फिर दाएँ हाथ से सूत को पकड़े हुए तन कर खड़े हो जाते हैं और सूत को अपने सिर के एक हाथ ऊपर ले जाकर वहाँ से उसे तोड़ लेते हैं। इस प्रकार अपने शरीर की लम्बाई के बराबर से कुछ अधिक लम्बा सूत प्रस्तुत हो जाता है। उसे समेट कर एक 'गोली'-सी बना लेते हैं और उसे अपने सिर के चारों ओर घुमाकर 'होलिकाग्नि' में फेंक देते हैं।

'दूसरी क्रिया' के अनुसार सरसों के तेल और आटे को मिला कर उबटन बनाया जाता है, जिसे हाथ-पैर आदि अङ्गों में लगा

कर मैल छुड़ाया जाता है। इस मैल को भी एकत्र करके 'होली की अग्नि' में डाल दिया जाता है।

'तीसरी क्रिया' में 'होलिकाग्नि' की तीन बार परिक्रमा करनी होती है।

उक्त तीन क्रियाओं के करने के बाद उपस्थित सभी लोग एक-दूसरे से गले मिलते हैं और परस्पर अबीर-गुलाल लगाते हैं तथा हास - परिहास करते हैं। इन तीनों ही क्रियाओं का दूर-गामी महत्त्व है। इनके प्रभाव से आनेवाले नए वर्ष के काल में शरीर विविध प्रकार के रोगों की चपेट में आने से बचा रहता है, स्वास्थ्य अच्छा बना रहता है और मन की विचार - धारा सन्मार्ग की ओर उन्मुख होती है।

'होली' रात्रि में जलाई जाती है। उक्त तीनों क्रियाएँ उसी समय की जाती हैं और दूसरे दिन प्रातः-काल उठ कर 'होलि-काग्नि' में गर्म किए गए जल से स्नान कर पुनः होलिका - पूजन, प्रदक्षिणा कर उसकी भस्म अपने मस्तक आदि अङ्गों पर लगाई जाती है। तब 'रङ्गोत्सव' का प्रारम्भ होता है।

रङ्गोत्सव और प्रेम-भावना

'रङ्गोत्सव' में सुगन्धित एवं मन-मोहक रङ्गों के उपयोग का विधान किया गया है। 'टेसू' के फूलों से बने प्राकृतिक रङ्गों से शरीर के आप्लावित होने से शारीरिक स्वास्थ्य एवं मानसिक आनन्द की उपलब्धि होती है और इस मनोहर 'रङ्ग-क्रीड़ा' में भाग लेनेवालों में परस्पर प्रेम की भावना सुदृढ़ होती है। 'रङ्ग-क्रीड़ा' के समाप्त होने पर अपराह्न में स्वच्छ जल से स्नान कर लोग नवीन वस्त्र पहन कर एक दूसरे के घर जाकर परस्पर पुनः

गले मिलते हैं और एक दूसरे को स्वादिष्ट स्वास्थ्य-वर्द्धक जल-पान कराकर बन्धुत्व-भाव को सुदृढ़ करते हैं।

इस प्रकार विधि - पूर्वक 'होलिकोत्सव' मनाने की परम्परा रही है। इस परम्परा के माननेवालों को सदा सुख - सौभाग्य सुलभ रहता है, इसमें सन्देह नहीं।

'होलिकोत्सव' और आध्यात्मिक साधना

आध्यात्मिक साधना की दृष्टि से 'होलिकोत्सव' का अपना विशेष महत्त्व है। इसके कोलाहल-पूर्ण उल्लास के वातावरण में साधक के आत्म - संयम और अनुशासन की परीक्षा होती है। 'सोऽहम्', 'शिवोऽहम्', 'अहं - ब्रह्मास्मि' आदि महा - वाक्यों की विश्व - व्यापी महती समता की भावना को प्रत्यक्ष करते हुए साधक अपने मन को एकाग्र रखता है और 'होली' की 'महा-निशा' में जब सामान्य लोग सो जाते हैं, अपनी साधना में तत्पर हो जाता है। इस पवित्र 'रात्रि' की साधना से उसे विशेष शक्ति प्राप्त होती है। भारत में प्रायः सभी जानते हैं कि 'होलिका' की 'महा - रात्रि' मन्त्र - तन्त्रादि की सिद्धि के लिए एक श्रेष्ठ अवसर है।

इस संक्षिप्त विवरण से स्पष्ट है कि 'होली' का महोत्सव सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से, राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से तथा आध्यात्मिक साधना की दृष्टि से बड़ा ही उपयोगी महान् पर्व है। यही कारण है कि इसे मनाते हुए शताब्दियाँ बीत जाने पर भी इसकी लोक - प्रियता में कोई कमी नहीं आई है, अपितु यह अधिकाधिक व्यापक ही होता जा रहा है।

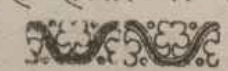

'होलिका'-पर्व
का
महत्त्व

हिन्दुओं का 'होलिका'-पर्व अति प्राचीन पर्व है। 'नव-रात्र', 'दीपावली'-महोत्सवों की भाँति यह भारतवर्ष में आज भी सर्वत्र मनाया जाता है। 'महोत्सव'-सम्बन्धी धार्मिक शिक्षा के अभाव के कारण आज यह पर्व बहुधा विकृत-रूप में उच्छृङ्खलता-पूर्वक मनाया जाता है। अतः आवश्यकता है कि 'होलिका' - महोत्सव के महत्त्व को हम समझें और विहित अनुष्ठान द्वारा इससे लाभ उठाएँ।

अग्नि-जागरण की मूल-प्रेरणा और 'होलिका'

हिन्दू - धर्म की विविधताओं के कारण विभिन्न प्रदेशों में 'होलिका' - महोत्सव के स्वरूपों में भेद दिखाई देते हैं। कहीं 'होलिका'-महोत्सव को भगवान् श्रीकृष्ण - सम्बन्धी पर्व के रूप में मनाया जाता है और 'होली' को 'पूतना' - ज्वलन माना है। कहीं 'होलिका' - पर्व को श्रीप्रह्लाद की घटना से सम्बन्धित मानते हैं। कुछ लोग 'होलिका' - महोत्सव को महा - देव द्वारा कामदेव का जलन मानते हैं। साधक 'होलिका' को 'महा-रात्रि' के रूप में देखते हैं और अनात्माकार वृत्तियों का लय करने का

प्रयत्न करते हैं, जिससे आत्माकार-वृत्ति की स्थिति सु-दृढ़ होती है और 'कुण्डलिनी-शक्ति' का जागरण होता है।

संक्षेप में सभी मतों में 'अग्नि - जागरण' की प्रधानता है। 'अग्नि - जागरण' की मूल - प्रेरणा हमें वेदों से मिली है। 'वेद' कहते हैं—'अग्निर्जागार तमृचः कामयन्ते, अग्निर्जागार तमु सामानि यन्ति। अग्निर्जागार तमयं सोम आह, तवाहमस्मि सख्ये न्योकाः॥ (ऋग्वेद, ५/४४/१५) अर्थात् जिस राष्ट्र की व्यक्तिगत अग्नि (उत्साह) और राष्ट्र-गत अग्नि (तेज) जाग्रत् हैं, वही राष्ट्र सर्व-सौभाग्यों का अधिकारी है।

शास्त्रों, पुराणों में 'होलिका'

कर्म - मीमांसा एवं पुराणों के अनुसार होलिका - महोत्सव का आरम्भिक नाम 'होलाका' था। महर्षि जैमिनि - कृत 'कर्म-मीमांसा-शास्त्र' में 'होलाकाधिकरण' नामक स्वतन्त्र कर्म-काण्ड का वर्णन है। वात्स्यायन ऋषि ने पारम्परिक उत्सवों-महोत्सवों में 'होलाका' को श्रेष्ठ महोत्सव माना है। हेमाद्रि ने होलिका-पूर्णिमा को 'हुताशनी' कहा है। 'लिङ्ग - पुराण' में फाल्गुन पूर्णिमा को 'फाल्गुनिका' कहा गया है और इसे बाल - क्रीड़ाओं से पूर्ण एवं लोगों को ऐश्वर्य देनेवाली बताया है। 'वराह-पुराण' में इसे 'पटवास-विलासिनी' कहा गया है।

भविष्योत्तर-पुराण (१३२/१/५१) में इस उत्सव के सम्बन्ध में एक कथा दी गई है। महाराज युधिष्ठिर ने भगवान् कृष्ण से पूछा कि फाल्गुन-पूर्णिमा को प्रत्येक गाँव एवं नगर में उत्सव क्यों होता है? प्रत्येक घर में बच्चे क्यों क्रीड़ा-मय हो जाते हैं और 'होलाका' जलाते हैं? 'होलाका' में किस देवता की पूजा

होती है ? किसने इस उत्सव का प्रचार किया ? इसमें क्या-क्या कर्मानुष्ठान होते हैं ?

भगवान् कृष्ण ने युधिष्ठिर से राजा रघु की एक कथा कही। राजा रघु के पास लोग यह कहने के लिए गए कि 'ढुण्ढा' नामक एक राक्षसी बच्चों को दिन - रात डराया करती है और बच्चे उसके उत्पीड़न से सूख जाते हैं। राजा द्वारा पूछने पर उनके पुरोहित ने बताया कि वह मालिन की पुत्री एक राक्षसी है। इसे भगवान् शिव ने वरदान दिया है कि उसे देव, मानव आदि मार नहीं सकते और न वह अस्त्र - शस्त्र या जाड़े, गर्मी या वर्षा से मर सकती है। केवल क्रीड़ा-युक्त बच्चों से वह भयभीत हो सकती है।

'होलिका' अर्थात् 'सर्व-दुष्टापह होम'

पुरोहित ने यह भी बताया कि 'फाल्गुन की पूर्णिमा' को शीत ऋतु समाप्त होती है और ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है, तब लोग समुदायों में एकत्रित होकर हँसें एवं आनन्द मनाएँ। बच्चे लकड़ियों के टुकड़े, घास आदि एकत्रित करें तथा बड़े लोग रक्षोघ्न-मन्त्रों के उच्चारण-सहित उसमें आग लगाएँ। प्रज्वलित अग्नि-देव का सभी लोग तालियाँ बजाकर स्वागत करें, प्रदक्षिणा करें, हँसें और अपनी-अपनी भाषा में सर्वथा मुक्त होकर उच्च-स्वर से गायन, अट्टहास, क्रीड़ा करें। इस प्रकार के 'सर्व-दुष्टापह होम' से वह 'ढुण्ढा' राक्षसी भयभीत होकर मर जाएगी।

जब चक्रवर्ती राजा ने 'सर्व - दुष्टापह होम' का विधि - वत् अनुष्ठान किया, तो 'ढुण्ढा' राक्षसी मर गई और वह दिन 'होलाका' - ज्वलन के नाम से प्रसिद्ध हो गया। दूसरे दिन चैत्र

की प्रतिपदा पर लोगों को होलिका - भस्म को प्रणाम करना चाहिए, मन्त्रोच्चारण करना चाहिए, घर के प्राङ्गण में वर्गाकार स्थल के मध्य में 'काम - पूजा' करनी चाहिए। इससे सम्पूर्ण समुदाय 'रोग'-मुक्त होकर आनन्द से रहेगा।

पुराणों में 'ढुण्ढा' राक्षसी के अन्य नाम भी मिलते हैं। यथा--शीतोष्णा, असृक्या, सन्धिजा, अरुकूण्ठा, होलाका आदि। इन नामों के अर्थों का विवेचन करने पर तथा पौराणिक कथानकों के मन्तव्यों पर ध्यान देने से 'ढुण्ढा' राक्षसी के तात्त्विक स्वरूप का बोध होता है। 'ढुण्ढा'-शब्द 'ठुण्ठ'-शब्द का अपभ्रंश है। जिस प्रकार कोई वृक्ष मधु - रसात्मक प्राण-रस से वञ्चित होकर शुष्क हो केवल 'ठुण्ठ' (ठूँठ) ही रह जाता है, ठीक उसी प्रकार 'ढुण्ढा' राक्षसी के प्रकोप से बालकों का शरीर सूख कर केवल 'ठुण्ठ' - सा रह जाता है। दूसरे शब्दों में शिशिर और वसन्त की सन्धि - रूपा ऋतु एक ओर स्वास्थ्य के दृष्टि-कोण से सौम्य बालकों के लिए पीड़ा - दायक होती है, तो दूसरी ओर सम्वत्सराग्नि के क्षीण होने के कारण सम्पूर्ण समुदाय को काम-मोह-अज्ञान-रूपी जड़ता से आबद्ध कर देती है।

इससे बचने के लिए ही हमारे ऋषियों ने रङ्ग-वर्षण और राग-रागिनी-मय उत्सव के रूप में सर्व-दुष्टापह अग्नि-प्रज्वलन का विधान हमें दिया है। आवश्यकता है कि आज हम उक्त मन्तव्यों को पुनः समझें और पूर्णतया नीरोग बनते हुए नवीन सम्वत्सराग्नि को धारण करें।

'होरी'

'होलिका'-महोत्सव के आध्यात्मिक पक्ष को हृदयङ्गम करने के लिए यहाँ कुछ 'होरी'-गीत प्रस्तुत हैं। 'होलिका'-महोत्सव में भाग लेनेवाले बन्धु 'होलिका-पूजन' के साथ-साथ इन गीतों का गायन-मनन-भजन कर उद्‌बोधित एवं आनन्दित हो सकते हैं। चाहें तो, पूरे 'फागुन' मास में 'होरी' का गायन-मनन-भजन कर सकते हैं। अधिकाधिक लाभ ही होगा।

'होलिका'-रात्रि 'महा-रात्रि' कही गई है। 'अज्ञानता' की निवृत्ति हेतु व्यक्ति - गत स्तर पर अपवा सामूहिक स्तर पर 'होरी'-सम्बन्धी भजनों का विभिन्न वाद्य-यन्त्रों के साथ गायन-मनन-भजन विशेष अनुभूति-दायक होता है, इसमें सन्देह नहीं।

अगले पृष्ठों में योगिराज परम पूज्य बाबाश्री एवं सन्त देवीसहाय द्वारा विरचित पाँच 'होरी'-भजन प्रस्तुत हैं।

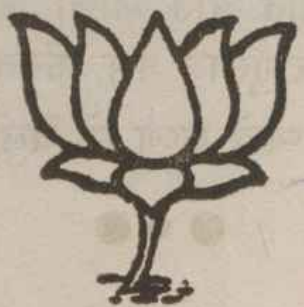

[१]

प्यारे कृष्ण सों होरी, खेलो आज नई ।

बुद्धि-विवेक निज राधा रानी, मन माधव चितई ।
हँसि-हँसि मान-संकेत मनावत, दुख-तम रैन गई ।
प्यारे कृष्ण सों होरी, खेलो आज नई ॥१

वृत्ति सखि गुण पञ्च सखा, सब नर्तत भूमि जई ।
बाजत ताल मृदङ्ग नर्तकी, आवत नित्य नई ।
प्यारे कृष्ण सों खेलो होरी, आज नई ॥२

नाचत थेई तथेई झाँझ डफ, नाद रङ्ग विजई ।
प्रति क्षण मूरति पटल जात रङ्ग, वृष्टि हार चितई ।
प्यारे कृष्ण सों खेलो होरी, आज नई ॥३

पलटत रूप, देखि पल-पल मन, मोह तिमिर फँसई ।
अजब तार नाटक नर रूपक, खेल स्वरूप भई ।
प्यारे कृष्ण सों खेलो होरी, आज नई ॥४

कौन जान गति-मति अति, लीला अपरम्पार नई ।
'मोति' भावना भर गुलाल नभ, फेंकत पलक लई ।
प्यारे कृष्ण सों खेलो होरी, आज नई ॥५

[२]

त्रि-विध सङ्ग, जग खेलत होरी ।

त्रि-गुण रङ्ग सत श्वेत साँवरो, लाल बाल भरि जोरी ।
श्वेत अबीर साँवरो काजर, जल गुलाल भरि गोरी ।
चुनर मन की रँग बोरी–त्रि-विध सङ्ग, जग खेलत होरी ॥१

चेतन मन रज सत तम खेलत, बुद्धि राग मिल जोरी ।
अमल समल मिल रङ्ग उड़ावत, दोउ साँवरी गोरी ।
प्रेम पन तन मन चोरी–त्रि-विध सङ्ग, जग खेलत होरी ॥२

धन कङ्कण सुख रङ्ग पिचकारी, ललित वृत्ति ले दौरी ।
छिरकत छटक हुलस हिय हर्षत, निरख हँसत मुख मोरी ।
मैन धँसि आवत जोरी–त्रि-विध सङ्ग, जग खेलत होरी ॥३

घन, पर गति, गति धन तव लीला, जग-विस्तार भयो री ।
तव क्रीड़ा-मय विश्व सनातन, 'मोती' उधर धरो री ।
ताप-हर बाल किशोरी– त्रि-विध सङ्ग, जग खेलत होरी ॥४

●●●

[३]

होरी आज कहाँ केयूरी ?

॥ होरी आज कहाँ केयूरी ? ॥

सत-रज-तम, रङ्ग-श्याम, श्वेत-रङ्ग पञ्च-गुलाल मयूरी,
'कृष्ण'--जीव सब, 'वृत्ति'--गोपिका, 'हवस'--पिचकियाँ पूरी।
मगन मन डोलत नूरी, आज कहाँ केयूरी ? ॥

॥ होरी आज कहाँ केयूरी ? ॥

कुम-कुम कर्म कमल-कर कोमल कुच कञ्चन कुल-शूरी,
देह गेह, सुधि नेह, नरम नमी, अचल लगन, नीमि धूरी।
खेले कस होरी अधूरी, आज कहाँ केयूरी ? ॥

॥ होरी आज कहाँ केयूरी ? ॥

भोग-रोग बहु-शोक-निराशा, अरु फलत भ्रम भूरी,
लज्जा, हठ, पिय ओट कपट-पट कटत नजर चर छूरी।
बरसत आज कहाँ केयूरी ? ॥

॥ होरी आज कहाँ केयूरी ? ॥

शरभ-पिया रङ्ग धूम मचाई सत-रज-तम-नदी-तीरे,
'मोती' भाव-मयङ्क, सुधा-सर, सौरभ, प्रेम-समीरे।
सखा सब हिल-मिल रूरी, पहिरो प्रभु की चूरी।
आज कहाँ केयूरी ? ॥

॥ होरी आज कहाँ केयूरी ? ॥

●●●

[४]

हरखि हिय होली मचाई

॥ अन्नपूरणा माई हरखि हिय होली मचाई ॥
जेतिनी शक्ति पुरी काशी में लीन्हें सकल बोलाई ।
वागीश्वरी, लक्ष्मी, ललिता सुनत श्रवन उठि धाई ॥
॥ हरखि हिय होली मचाई ॥

विन्ध्याचल दुर्गा, वाराहीं रहीं अबीर उड़ाई ।
भरि कुंकुमा, कमच्छा काली मारत मुख मुसकाई ॥
॥ हरखि हिय होली मचाई ॥

चौंसठि योगिनि ले चौंसट्ठी बिहँसत रङ्ग बरसाई ।
श्रीसङ्कटा शारदा त्रिपुरा जुरी जालिपा माई ॥
॥ हरखि हिय होली मचाई ॥

त्रिभुवन-पति पार्वती उठि उमँगि-उमँगि उर लाई ।
लाल-लाल फूलन की माला सबके गरे पहिराई ॥
॥ हरखि हिय होली मचाई ॥

सहस चार चण्डी चौरासी सिद्ध रहे गुन गाई ।
नओ नाथ डमरू मृदङ्ग डफ नाचत ताल बजाई ॥
॥ हरखि हिय होली मचाई ॥

तेंतीस कोटि देवता नभ से रहे सुमन बरसाई ।
लखत कुँवर लखि यह शोभा आनन्द उर न समाई ॥
॥ हरखि हिय होली मचाई ॥

[५]

शिव-पद प्रीति लगाई

॥ शिव-पद प्रीति लगाई ॥

राह गुरु-देव बताई ।
पूजौ देव-देवतन करि के शील-सनेह बढ़ाई ।
काम-क्रोध को करहु कलेवा, तृष्णा तरुण जराई ।
भस्म तन लेहु रमाई ॥
॥ शिव-पद प्रीति लगाई ॥

प्रेम-नीर नहवाय नाथ को, भाव की भस्म लगाई ।
फिकिर के फूल चढ़ाय, शीस पर धरम की धूप दिखाई ॥
ज्ञान-दीपक देहु जगाई ॥
॥ शिव-पद प्रीति लगाई ॥

मन-माला में समाय किए जप, पाप पुरातन जाई ।
यह नर-देह देवालय शिव को, तहाँ बसत नित आई ।
दास को देत दिखाई ॥
॥ शिव-पद प्रीति लगाई ॥

'देवी-सहाय' योग-जप के फल, शिवहिं समर्पि सिहाई ।
आशा-अतर लगाय गाय यश, पर्‌यो चरन अकुलाई ।
लियो तब प्रभु अपनाई ॥
॥ शिव-पद प्रीति लगाई ॥

शिव कै शरनागत रैहों।
मोद-मृदङ्ग-तमूरा तन को स्वाँस सितार बजैहों।
गैहों नाम शिवा-शिव को, नित सुरति की मूरति बनैहों।
तुरत त्रि-कुटि पै बसैहों।

हृदय उमङ्ग रङ्ग केसर को, आसा-अतर लगैहों।
अबीर-गुलाल सनेह-शील को, उन ही पै बरसैहों।
और न कहूँ चलि जैहों।

शिव-पग में अनुराग फाग मैं, निज-मति ताहि नचैहों।
रङ्ग भीने पग निरखि पिया के, मन-मधुकर को लगैहों।
उतर भव-सागर जैहों।

'देवी-सहाय' योग-जप के फल शिवहिं समर्पि सिहैहों।
पाप जराय कीच कारी करि, हर-बिमुखन के लगैहों।
दास शङ्कर को कहैहों॥

'होलिका'-पूजन

(१) आत्म-शोधन

'होलिका'-पूजन-कर्त्ता शुद्ध वस्त्रादि पहन कर 'होलिका' के समीप 'पूर्व' या 'उत्तर' की ओर मुख करके बैठे। तब—

'ॐ अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं, सः बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥'

यह मन्त्र पढ़कर अपने ऊपर पञ्च-पात्र से 'पवित्र जल' छिड़के और अपने को पवित्र समझे।

(२) आचमन

फिर क्रमशः—'ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ हृषीकेशाय नमः'—इन तीन मन्त्रों को कहते हुए 'पवित्र जल' से तीन बार 'आचमन' करे।

(३) आसन की पूजा

इसके बाद हाथ जोड़कर आसन पर बैठने का विनियोग पढ़े—

'ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य मेरु-पृष्ठ ऋषिः, सुतलं छन्दः, कूर्मो देवता, आसनोपवेशने विनियोगः।'

(४) आसन-शुद्धि

फिर निम्न मन्त्र पढ़कर 'आसन' पर 'पवित्र जल' छिड़के—

'ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम् ॥'

(५) सङ्कल्प

पुनः दाहिने हाथ में 'पञ्च-पात्र' से 'पवित्र जल' और 'अक्षत' लेकर 'सङ्कल्प' पढ़े। 'सङ्कल्प' पढ़ चुकने पर आसन के समीप 'अक्षत' व 'पवित्र जल' को छोड़ दे—

'ॐ तत्सत् अद्यैतस्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय-प्रहरार्द्धे, श्वेत-वाराह-कल्पे, जम्बू-द्वीपे, भरत-खण्डे, आर्यावर्त्त-देशे, 'अमुक'-पुण्य-क्षेत्रे, कलि-युगे, कलि-प्रथम-चरणे, 'व्यय'-सम्वत्सरे, फाल्गुन-मासे, शुक्ल-पक्षे, पूर्णिमा-तिथौ, रवि-वासरे, अमुक-गोत्रोत्पन्नो, अमुक-नाम शर्मा (वर्मा, गुप्तो, दासो वा) साम्वत्सरिक - योग - क्षेमार्थं गणेशादि-सह होलिकायाः यथोपचारैः पूजनमहं करिष्ये ।'

(६) भगवान् गणेश के आविर्भाव की भावना

'सङ्कल्प' करने के बाद भगवान् गणेश का पूजन करने के लिए एक सुडौल सुन्दर 'सुपाड़ी' को जल से स्वच्छ कर 'मौली' (रक्त - पीत सूत) से लपेट कर 'होलिका' के सम्मुख किसी आधार पर रक्खे। तब भगवान् गणपति के आविर्भाव की भावना करते हुए निम्न मन्त्र से उस सुपाड़ी पर गन्धाक्षत छोड़े—

'ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रिय - पति ꣳ हवामहे। निधीनां त्वा निधि-पति ꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।'

(७) आवाहन

यह समझते हुए कि श्रीगणपति जी का वहाँ आविर्भाव हो गया है, निम्न मन्त्रों से भक्ति - पूर्वक उनका आवाहन आदि करे—

'ॐ भूर्भुवः स्वः श्रीगणपते ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण।'

(८) प्राण-प्रतिष्ठा

अब 'लेलिहानी मुद्रा' दिखाते हुए 'सुपाड़ी' पर 'प्राण-प्रतिष्ठा' करे—

'ॐ मनो - जूतिर्जुषतामाज्यस्व बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु । विश्वे-देवा स इह मादयन्तम् ॐ प्रतिष्ठ ।'

(९) भगवान् गणेश का पूजन

इसके बाद 'सुपाड़ी' में विराजमान भगवान् गणपति का निम्न मन्त्रों से पूजन करे–

१ ॐ गणपतये नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि ।
२ ॐ गणपतये नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि ।
३ ॐ गणपतये नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि ।
४ ॐ गणपतये नमः पुष्पं समर्पयामि ।
५ ॐ गणपतये नमः धूपं घ्रापयामि ।
६ ॐ गणपतये नमः दीपं दर्शयामि ।
७ ॐ गणपतये नमः नैवेद्यं समर्पयामि ।
८ ॐ गणपतये नमः आचमनीयं समर्पयामि ।
९ ॐ गणपतये नमः ताम्बूलं समर्पयामि ।
१० ॐ गणपतये नमः दक्षिणां समर्पयामि ।

(१०) प्रार्थना

अन्त में हाथ जोड़कर भगवान् गणपति से प्रार्थना करे—'अनेन पूजनेन श्रीगणपतिः प्रीयताम् ।'

(११) नव-ग्रह-पूजन

नौ ग्रहों के पूजन के लिए भगवान् गणेश के समीप एक पात्र रक्खे। दाएँ हाथ में गन्धाक्षत लेकर भावना से सामूहिक रूप में उन सबका निम्न मन्त्र पढ़कर आवाहन करे—

ॐ सूर्य-चन्द्र-मङ्गल-बुध-बृहस्पति-शुक्र-शनिश्चर-राहु-केतु-नव-ग्रहेभ्यो नमः। ॐ नव-ग्रहाः ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण।

यह मन्त्र पढ़कर उक्त पात्र में गन्धाक्षत छोड़े। फिर निम्न मन्त्रों से प्रत्येक मन्त्र के आदि में 'ॐ' लगाकर क्रमशः सूर्यादि नौ ग्रहों का पाद्यादि उपचारों से पूजन करे। यथा—

१. सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि।
२. ,, शिरसि अर्घ्यं ,,
३. ,, गन्धाक्षतं ,,
४. ,, पुष्पं ,,
५. ,, धूपं घ्रापयामि।
६. ,, दीपं दर्शयामि।
७. ,, नैवेद्यं समर्पयामि।

८. सूर्यादि-नव-ग्रहेभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि

९. ,, ताम्बूलं ,,

१०. ,, दक्षिणां ,,

फिर हाथ जोड़कर सभी ग्रहों की प्रार्थना करे–

ब्रह्मा-मुरारिस्त्रिपुरान्त-कारी,

भानुः शशी भूमि-सुतो बुधश्च ।

गुरुश्च शुक्रः शनि-राहु-केतवः,

सर्वे ग्रहाः शान्ति-करा भवन्तु ।।

(१२) षोडश मातृका-पूजन

तदनन्तर भगवान् गणेश के समीप ही कोई पात्र रखकर षोडश मातृकाओं की पूजा करे । दाएँ हाथ में गन्धाक्षत लेकर पहले मातृकाओं का आवाहन करे–

ॐ गौरी-पद्मा-शची-मेधा-सावित्री - विजया - जया-देवसेना-स्वधा-स्वाहा-माता-लोक-माता - धृष्टि - पुष्टि-तुष्टि-कुल-देवता–षोडश-मातृकाभ्यो नमः । ॐ षोडश-मातृकाः ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, मम पूजां गृहाण ।

फिर क्रमशः सोलह मातृकाओं का पाद्यादि उपचारों से पूजन करे–

१. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि । २. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि । ३. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः गन्धाक्षतं समर्पयामि । ४. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः पुष्पं समर्पयामि । ५. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः धूपं घ्रापयामि । ६. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः दीपं दर्शयामि । ७. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः नैवेद्यं समर्पयामि । ८. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः आचमनीयं समर्पयामि । ९. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः ताम्बूलं समर्पयामि । १०. गौर्यादि-षोडश-मातृकाभ्यो नमः दक्षिणां समर्पयामि ।

अन्त में सोलह मातृकाओं की प्रार्थना करे—

ते सम्मता जन-पदेषु धनानि तेषाम्,
तेषां यशांसि न च सीदति धर्म-वर्गः ।
धन्यास्त एव निभृतात्मज-भृत्य-दारा,
येषां सदाऽभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ।।

[१३] 'होलिका'-पूजन

उक्त प्रकार भगवान् गणेश, नव-ग्रहों और मातृकाओं की पूजा-प्रार्थना करने के बाद 'होलिका' का पूजन करे । पहले आवाहन करे—

'ॐ शिशिरस्यान्तके देवि ! वसन्त-मदन-प्रिये !
आगताऽसि विधानेन, पूजां मे हर होलिके !'

इसके बाद पाद्यादि उपचारों से 'होलिका' का पूजन करे । यथा—

ॐ पादयोः पाद्यं समर्पयामि, शिरसि अर्घ्यं समर्पयामि, गन्धाक्षतं समर्पयामि, पुष्पं समर्पयामि, धूपं घ्रापयामि, दीपं दर्शयामि, नैवेद्यं समर्पयामि, आचमनीयं समर्पयामि, ताम्बूलं समर्पयामि, दक्षिणां समर्पयामि ।

'होलिका'-पूजन के बाद नमस्कार करे—

'अर्चिता ब्रह्मणा देवि ! विष्णुना शङ्करेण च ।
इन्द्रादि - लोक - पालैश्च, होलिके ! कमलालये ॥'

(१४) 'होलिका'-प्रदक्षिणा

तब अग्नि लाकर 'होली' को जलाए और हाथ जोड़कर उसकी 'प्रदक्षिणा' करे ।

अपनी लम्बाई से कुछ अधिक कच्चा सूत नाप कर अपने सिर पर सात बार घुमाकर सरसों के साथ 'होली' में छोड़ दे । फिर हाथों-पैरों आदि में 'उबटन' लगाकर शरीर का 'मैल' भी 'होलिकाग्नि' में डाल दे ।

(१५) 'होलिका'-विसर्जन

'होली' को कुछ देर तक तापे और उसके जल चुकने पर 'विसर्जन' करे। यथा—'यान्तु देव - गणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीं। इष्ट-काम-प्रदानाय, पुनरा-गमनाय च।'

पूजन-सामग्री

'होलिका'-पूजन के लिए निम्न-लिखित 'पूजन-सामग्री' पूजन करने से पूर्व एकत्र कर लेनी चाहिए—

१. पवित्र जल सहित 'पञ्च-पात्र' एवं 'आचमनी'।

२. गन्धाक्षत, पुष्प, धूप (अगरबत्ती), चन्दन, अबीर-गुलाल, दीप, घण्टी, नैवेद्य, ताम्बूल, दक्षिणा।

३. सुडौल सुन्दर 'सुपाड़ी' एवं 'मौली' (रक्त-पीत-सूत)।

४. कच्चे सूत की पिड़िया।

५. सरसों।

६. उबटन (तेल या घी में सना आटा)।

साधनोपयोगी साहित्य

हेतु

साधना-माला

पढ़ें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें-